Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2016 = 6.17, www.srjis.com
UGC Approved Sr. No.49366, JAN–FEB, 2018, VOL- 5/43

गढ़वाल में जनजागरण (जनांदोलन) : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण

कविता कन्नौजिया, Ph. D.

एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, किशोरी रमण स्नातकोत्तर, महिला महाविद्यालय मथुरा।

Abstract

प्रस्तुत अध्ययन 'गढ़वाल में जनजागरण (जनांदोलन) : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण' के अन्तर्गत वहां की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक पहलुओं तथा सामाजिक, आर्थिक विकास की सम्भावनाओं के प्रति जनता की जागरूकता आदि तथ्यों पर केन्द्रित है। इस अध्ययन में तथ्यों एवं आकड़ों का संग्रह विभिन्न द्वितीयक स्रोतों तथा महत्पूर्ण क्षेत्रों के सर्वेक्षण पर आधारित है। भारत का राज्य उत्तराखण्ड २७वें राज्य के रूप में सन्२००० ई. में एक स्वतंत्र राज्य के रूप में घोषित हुआ। यह राज्य जन एवं सामाजिक आकांक्षाओं की राजनीतिक अभिव्यक्ति से भरा है। इस राज्य को बनाने में यहाँ की परम्परा, संस्कृति एवं प्राकृतिक संरक्षण में जनांदोलनों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। इस राज्य का नेतृत्व जमीन से जुड़े एवं समाज के प्रति संवेदनशील नेताओं से ओत-प्रोत रहा है। यहाँ का मुख्य क्षेत्र गढ़वाल है, यहां की अधिकांश आबादी गांवों में रहती है। जहां दुर्गम, पर्वतीय एवं जंगली क्षेत्रों में लोगों का वास है। जनसुविधाओं को गांव-गांव तक पहुँचाना एक बड़ी चुनौती है। 'इको-टूरिज्म की अनन्त संभावनाएं है। परन्तु उनका पूर्ण रूप से विकसित होना बाकी है। इस धरती से समय-समय पर प्राकृतिक संरक्षण, परम्परा, संस्कृति को संरक्षित करने हेतु जनांदोलन किये गये। मनुष्य समाज का एक घटक है। सामाजिकता मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति हैं। वह जिस समाज मे रहता है उस समाज की संस्कृति व संम्पदा के संरक्षण का दायित्व उसके कंधों पर रहता है। यह ऐतिहासिक तथ्य है कि सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक न्याय से वंचित लोग संघर्ष का रास्ता ढूँढ़ते है तथा व्यवस्था को बदलते समय के साथ जन भावनाओं के अनुरूप बनाने का प्रयास करते है। प्रत्येक आन्दोलनों की जड़ उसके अपने समाज में ही होता है। जनांदोलन समाज परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त करता है।

Keywords- *जन, जागरण, आन्दोलन, पर्यावरण, संरक्षण।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

गढ़वाल उत्तराखण्ड का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है इसके पूर्व में रूद्र प्रयाग, पश्चिम में देहरादून, उत्तर में उत्तरकाशी तथा दक्षिण में पौड़ी गढ़वाल स्थित है। यह एक पहाड़ी क्षेत्र, प्राकृतिक संम्पदा का धनी क्षेत्र है। यहां की भाषा गढ़वाली एवं हिन्दी है। गढ़वाल का साहित्य एवं संस्कृति बहुत समृद्ध है। कुछ इतिहासकार मानते है कि यह भूमि 'देव भूमि' है। चाँदी के समान सफेद पर्वत, कल-कल करती नदियां, हरी-भरी शीत जलवायु, शांत एवं स्वस्थ्य वातावरण में समय बिताने के लिए पर्यटकों का पसंदीदा क्षेत्र एक सौन्दर्यपूर्ण भूमि है जो लेखको के लिए लेखनी हेतु प्रेरणा प्रदान करती है। प्राचीन में पत्थर पर नक्काशी वाली कला के लिए प्रसिद्ध अब लकड़ी पर नक्काशी की कला के लिए प्रसिद्ध है। वास्तुशिल्प कार्य के अवशेष किला, मंदिर , पीठ आदि में देखने को मिलता है। यहां की अपनी संगीत एवं नृत्य की परम्परा प्रचलित है। यहां के लोगों के वस्त्रों पर आर्थिक स्थिति का प्रभाव स्पष्ट दिखायी देता है। गढ़वाल जनपद हिमालयी वनस्पतियों की विशाल श्रृंखला से भरा पड़ा है यहां की वन संपदा में 'साल वन' क्षेत्र के पेड़ जैसे सैन, बकली, जिंगान, हल्दू, काजू,संघान, रोहिणी और अमलतात पाये जाते है। बकली से लकड़ी का कोयला, संघान के लकड़ी से कृषि के औजार बनाये जाते है। 'चिड़ वन' क्षेत्र के मृदा में काफी नमी होती है। जो जंगलो में आगजनी होने से बचाती है। चिड़ पेड़ से गोद और इसकी लकड़ी से इमारत बनाई जाती है, चिड़ से तेल निकालते है और इसके बीज

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

को भूनकर खाते है। 'देवदार वन' की लकड़ी अधिक मूल्यवान होती है इसकी लकड़ी से इमारते, नांव, अनाज के भण्डार व रेलवे स्लीपर बनाये जाते है। 'अल्पाईन चारागाह' यहां के पशुओं को चरने का महत्वपूर्ण स्थान हैं। जून से सितंबर तक यहां पर कई तरह के घांस व जड़ी-बूटी वाले पौधे उग आते है। यहां पर प्रसिद्ध 'भोजपत्र' नामक वृक्ष पाये जाते है। इसके वृक्ष की टहनीयों से भोजपत्र प्राप्त होते है। कागज की खोज होने से पूर्व भोजपत्र का उपयोग पुराने समय में पुस्तक लिखने हेतु किया जाता था। प्रकृति अपने आप में संतुलन तथा व्यवस्था का बेजोड़ नमूना है। यहां के पेड़-पौधे, वनस्पतियों की मजबूत जड़े भूस्खलन तथा बाढ़ से बचाये रखती थी। बर्फ व बरसात दोन के पानी काफी हद तक सोंख लेती थी। इतना ही नही यहां की वनस्पतियां हिमालय की जलवायु, मौसम, तापमान जैव विविधता तथा पारिस्थिकी तंत्र को भी संतुलित बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाति थी।

ब्रिट्रिश शासन काल से आज तक इन क्षेत्रों के प्राकृतिक संसाधनों का दोहन होता रहा। यहां की प्राकृतिक जंगलों का विनाश शुरू हो गया। पर्यटको की आवक बढ़ने के साथ-साथ अनियोजित विकास की जो आंधी बही, वह गढ़वाल के पर्यावरण के लिए नुकसानदेह साबित हुई। विकास के नाम पर वन कांटे जाने लगे, भूमि का अधिग्रहण किया जाने लगा जिसका प्रभाव वहां के जनजीवन पर घातक रूप से पड़ा। सरकारी तथा निजी क्षेत्र के लोगों द्वारा विकास की जो नींव रखी गई। वह, वहां के पारिस्थितिकी तंत्र के अनुकूल नही रहा, इससे उस क्षेत्र के लोगों के साथ सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक न्याय नही हुआ। जिसके विरूद्ध अनेकानेक जनांदोलन हुए। स्वतंन्त्रता से पूर्व राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन एवं स्वतंत्रता के बाद सामाजिक, आर्थिक,राजनीतिक, शैक्षिक एव प्राकृतिक संरक्षण हेतु गढ़वाल के लोगों ने जनजागरण के माध्यम से जनांदोलन में सक्रिय भूमिका निभाया है। देवभूमि सदैव से ही शान्त रहा है। यहां का जनमानस अपेक्षाकृत आज भी संतोषी और यथा स्थितिवादी है। उसके इस चारित्रिक गुण पर जब कभी आँच आयी तो वह विद्रोह करने से नही चुका अपने हम की मांग, जोर जुल्म के खिलाफ और स्वाभिमान रक्षा हेतु समय आने पर आन्दोलित हो उठा। यहां के आन्दोलन का अपना एक इतिहास है। जब यहां राजतंत्र था तब भी कुव्यवस्था के खिलाफ आक्रोश फुटा था। औपनिवेशिक शासन में तो आन्दोलनों की एक लम्बी सूचि है-१८१५ में रन्वाल्टों का आन्दोलन, १८५१ में तिहाड़ कर विरोधी आन्दोलन, १९२१ में कुली वर्दायस आन्दोलन, रजवार के विरूद्ध उपजा किसान आन्दोलन, जंगल बचाओं आन्दोलन, टिहरी बाँध विरोधी आन्दोलन आदि ऐसे आन्दोलन है जिन्होंने गढ़वाल के जनता को जोड़ा है।

कुली-बेगार आन्दोलन- अंग्रेजी शासन काल में,अंग्रेजों के सामान को एक गांव से दूसरे गांव तक ढोना पड़ता था। इसका लेखा जोखा गांव के मुखिया के पास रजिस्टर में रहता था। जिसे बेगार रजिस्टर कहा जाता था। १३-१४जनवरी १९२१ को बागेश्वर में सरयू नदी के किनारे उत्तरदायी मेले में बद्रीदत्त पाण्डे, हरगोंविन्द पंत व चिंरजीलाल के नेतृत्व में लगभग ४० हजार अनांदोलनकारियों ने बेगार नही देने का संकल्प लिया ओर कुली बेगार से संबंधित रजिस्टर जला दिये। यही से इस कुप्रथा का अन्त हो गया।

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

www.jagran.com

गाड़ी, सड़क आन्दोलन :-गाड़ी सड़क के लिए गढ़वाली निरन्तर मांग करता रहा, वहां की जनता को आशा थी कि उनकी आवागमन की असुविधा दूर हो जायेगी। लेकिन ऐसा नही हुआ। गढ़वाली द्वारा सड़क के लिए भारी आन्दोलन किया।

टिहरी राज्य आन्दोलन- प्रजातांत्रिक शसन की मांग को लेकर कई जनांदोलन हुए टिहरी में १९३९ में श्री देवसुमन , दौलतराम नागेन्द्र सकलानी आदि कि प्रयासों से आन्दोलन का विस्तार हुआ। मई १९४४ में श्री देवसुमन अनिश्चित कालीन भूख हड़ताल बैठ गये। २५ जुलाई १९४४ को ८४ दिन के भूख हड़ताल के बाद उनकी मृत्यु हो गई। १९४८ में कीर्तिनगर आन्दोलन हुआ। जिसमें भोलूराम ओर नागेन्द्र शहिद हुए। अगस्त १९४९ से टिहरी संयुक्त उत्तरप्रदेश का जिला बन गया।

डोला पालकीय आन्दोलन- इस आन्दोलन से पूर्व राज्य के शिल्पकारों को शादी विवाह के अवसर पर डोला पालकी में बैठने का अधिकार नही था। जयानन्द भारती द्वारा डोला पालकी आन्दोलन चलाया गया। जिसके बाद शिल्पकारों यह अधिकार मिल गया।

जब उत्तराखंड खड़ा हुआ दलितों के इस अधिकार के लिए 'डोला पालकी आंदोलन'

Vedictruth.blogspot.com

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

शराब बंदी के लिए आन्दोलन- जब से कांग्रेस ने सत्ता ग्रहण की तब से मद्यनिषेध का विषय एक विवादास्पद बन गया है। सत्ता प्राप्त करने के पूर्व मद्यनिषेध कांग्रेस आन्दोलन का एक अंग रहा है। सत्याग्रह का एक अंग मद्य की दुकानों पर धरना देकर जेल जाना प्रमुख बात थी पर जब सत्ता प्राप्त हुई तब मद्य से जो आमदनी सरकार को प्राप्त है उसका मोह सरकारे-संवण नही कर पा रही है। केन्द्रीय सरकार तथा प्रांतीय सरकार मद्यनिषेध करती है तो, उनकी उतनी आय तो समाप्त हो जाती है पर करोड़ो रूपया चारी से मद्य पीने वालों की देख-रेख पर व्यय करना पड़ेगा। यह सरकार के सामने एक समस्या है। आंध्र मंत्री मण्डल का पतन इसी वाद-विवाद पर हुआ। कांग्रेस उच्चवृत्त में मोरार देसाई को छोड़कर और लोग मद्यनिषेध के पक्ष में शिथिल रहे। मोरार जी देसाई ही एक ऐसे व्यक्ति थे जिसने अपने प्रान्त में इसको समाप्त करने का प्रयास किया। हमे इस समाचार को सुनकर बड़ी प्रसन्नता हुई की प्रधानमंत्री सम्मेलन में एक मोरार जी देसाई वह व्यक्ति थे जिन्होंने घोषणापूर्वक कहा था कि यदि मद्यनिषेध चालू की बात कही गयी तो वे इस्थीफा दे देगें और उस दिन भी हमें असीम् प्रसन्नता हुई। जहां शराब की भट्टी बन्द की जा रही है। वहां कुछ निम्नस्तरीय लोग कानून की नाजायज आड़ लेकर मादक द्रव्यों की प्राकारान्तर से दुकाने खोल रहे है। उदाहरण स्वरूप पौड़ी, देवप्रयाग तथा अन्यत्र मादक द्रव्यों का खुलेआम विक्रय हो रहा है। कई वर्षों तक हजारो लोग शराब बंदी के लिए सशक्त आन्दोलन करते रहे। इस आन्दोलन में महिलाओ की भूमिका अहम् रही। (कर्मभूमि, ३० नवम्बर १९५४)।

मैती आन्दोलन- मैती शब्द का अर्थ मायका होता है इस अनोखे आन्दोलन के जनक कल्याण सिंह रावत थे। उन्होंने एक कालेज के शैक्षणिक भ्रमण में देखा की छात्राएं वनों की देख-भाल कर रही थी, श्री रावत ने यह महसूस किया की पर्यावरण के संरक्षण में युवतियां ज्यादा बेहतर ढंग से कार्य कर सकती है। उसके बाद से ही मैती आन्दोलन शुरू हुआ। इस आन्दोलन के कारण आज भी विवाह समारोह के दौरान वर-वधु पौधारोपड़ की परम्परा निभाते है। मायका पक्ष के लोग उस पौधे की देख-भाल की परम्परा निभाते है।

चिपकों आन्दोलन- इस आन्दोलन की शुरूआत १९७२ में वनों की अंधाधुन एवं अवैध कटाई को रोकने के उद्देश्य से हुई। १९७४ तक यह आन्दोलन जोर पकड़ लिया, इस आन्दोलन को शिखर तक पहुँचाने में पर्यावरणविद् सुन्दरलाल बहुगुणा की भूमिका रही। बहुगुणा जी एवं चण्डीप्रसाद भट्ट -'जब तक पेड़ो की कटाई जारी है। मैं स्वम को इस योग्य नही समझता हूँ'। 'हिमालय बचाओं और देश बचाओं' का नारा दिया। वहां की महिलाओं ने यह नारा दिया कि 'हिम पुत्रियों की ललकार वन नीति बदले सरकार, वन जागे वनवासी जागे'।

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

पाणी राखो आन्दोलन– पाणी का अर्थ जल से है। इस आन्दोलन का मुख्य उद्देश्य पर्यावरण और जल स्रोतों को सुरक्षित रखना था। सरकार द्वारा चलायी गई 'वननीति के कारण वनों का अथाह कटान हो रहा था। इस वनोन्मूलन के कारण पर्यावरण संकट पैदा हो गया। जिससे पेय जल की समस्या गहराने लगी। पर्यावरणविद् शिक्षक सच्चिदानन्द भारती द्वारा पाणी राखों आन्दोलन की शुरूआत हुई। इन्होंने 'दुधतोली लोक विकास'

संस्थान का गठन किया जिसके तहत अधिकारिओं पर पेड़ न काटने का दबाव बनाया गया। लाखो पेड़ लगाये गये, बरसात के पानी को जमा करने के लिए गड्ढें बनाएं। बंजर भूमि को हरा-भरा करने का प्रयास किया गया।

कनकटा बैल आन्दोलन– इस आन्दोलन की शुरूआत अल्मोड़ा के लमगड़ा गांव से हुई। यह आन्दोलन अधिकारियों द्वारा किये गये भ्रष्टाचार के खिलाफ था। अल्मोड़ा में एक बैल के ऋण लेने के लिए दो बार कान काटे गये, दो बार ऋण लिया गया। दोनो बार बीमा की राशि अधिकारियों द्वारा हड़प ली गई। भ्रष्ट अधिकारियों के इस भ्रष्टाचार को उजागर करने के लिए बैल को विभिन्न क्षेत्रों में घुमाया गया तथा अधिकारियों का भ्रष्टाचार का पर्दाफाश किया गया। रक्षासूत्र आन्दोलन- इस आन्दोलन के तहत ऊँचाई वाले क्षेत्रों में काटने के लिए चिन्हित वृक्षों पर रक्षासूत्र बाँधकर उसे सुरक्षित रखने का संकल्प लिया गया। इस आन्दोलन का मूल कारण पहाड़ी के ऊँचे स्थान वाले वृक्षों के कटने से आरम्भ हुआ। लोगों ने कटने वाले सभी चिन्हित वृक्षों पर रक्षसूत्र बाँध दिया। इससे जंल के वृक्ष सुरक्षित रहे। इस आन्दोलन का नारा था- 'ऊँचाई पर पेड़ रहेगें, नदी ग्लेशियर टिके रहेगें, जंगल बचेगा देश बचेगा'।

टिहरी बाँध विरोधी आन्दोलन– टिहरी बाँध के निर्माण के लिए सरकार ने अपना हण्टर दिखा दिया तब टिहरी नगर व उससे संबन्धित ६२ गांवों की जनता अपने घर, बाग,खेत,खलिहान, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर के जलमग्न हो जाने की आशंका से मुख-प्रदर्शन के मुद्रा में खड़ी हो गई। टिहरी बाँध विरोधी आन्दोलन ने टिहरी बाँध परियोजना से क्षेत्र के पर्यावरण ग्रामीण जीवन शैली ,वन्य जीव, कृषि तथा लोक संस्कृति को होने वाली क्षति की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित किया।

गढ़वाल का अधिकांश भाग पर्वतीय है इस कारण कृषि का उत्पादन अधिक नही हो पाता फिर भी रोजगार के अन्य साधन न होने के कारण जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा कृषि से जोड़ा है। कृषि उत्पादन की दृष्टि से मानसून पर निर्भर है। यहां भूमि ढालूदार तथा सीढ़ीदार होने के कारण वहा के निवासियों को आत्मनिर्भर बनाने में सक्षम नही है। जिसके कारण पहाड़ी जनमानस का तीव्र गति से शहरों की ओर पलायन हुआ है। पुरूषों के पलायन के कारण गृहस्थी तथा कृषि अर्थव्यवस्था का बोझ महिलाओं के कंधे पर है। पर्वतीय भूभाग में कृषि का मूल आधार महिला है। खेत में बीज खाद निराई-गुड़ाई, कटाई एवं घर का रख-रखाव संबन्धि कार्य महिलाओं के द्वारा किये जाते है। खेती पशुपालन ईंधन चारे पानी की व्यवस्था में सुबह से शाम तक जुटे रहना नारी की स्थिति बन गयी है। यहां के कृषि परक व्यवसाय में पशुपालन शामिल हैं। परन्तु यहां पर पशु उन्नत प्रजाति के नही है जिसके कारण पवर्तीय क्षेत्रों दुग्ध उत्पादन कम होता है। उनका उत्पादन भी कम होता है। इसका प्रमुख कारण चारागाहों का अभाव है। जिसके कारण पशुपालन और भेड़ पालन से लोगों का मोंह भंग हो रहा है। हालांकि पशुओं की सेवा के नाम पर बने चिकित्सालय और पशुधन में सुधार कार्यक्रम इसके शहरी क्षेत्रों में सुचारू रूप से चल रहे हो ,लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित चिकित्सालयों एवं

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सुविधाओं का नितांत अभाव है। यहां की अर्थव्यवस्था का एंकागी एवं असंतुलित विकास हुआ है। बाजार की असुविधा और तकनीकी कौशल की कमी यहां के औद्यौगिक विकास में बाधक है। पर्वतीय क्षेत्रों में संसाधनो का विदोहन असंतुलित रूप से हुआ। जिसके लिए समय-समय पर प्राकृतिक संसाधनों को बचने के लिए जनांदोलन चलाया गया। इस दृष्टि से कुछ सुझाव निम्नवत है- यहां के क्षेत्रीय विकास एवं आत्म निर्भरता की दृष्टि से स्थानीय मानवीय संसाधनों, प्राकृतिकसंसाधनों, वित्तीय संसाधनों, भौगोलिक परिस्थितियों के अनुरूप निर्धारण किया जाना चाहिए।

पर्वतीय क्षेत्रों क विकास के लिए नियोजनपा निर्धारण के समय महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक उत्थान के कार्य को प्रथमिकता दी जानी चाहिए। पर्वतीय क्षेत्रों से युवाओं का पलायन रोकने के लिए पर्वतीय अंचलों के अनुरूप योजनाएं बनाकर उद्योग स्थापित किये जाने चाहिए। वहां के प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित उद्योग, बेरोजगारी दूर करने में सहायता हो सकते है। नवीन बड़े उद्योगों के साथ पारम्परिक व्यवसायों के पुनरउद्धार एवं संरक्षण की आवश्यकता है। इन क्षेत्रों मे आत्म निरर्भता की दृष्टि से तकनीकी शिक्षा में प्राथमिकता दी जानी चाहिए । पर्वतीय क्षेत्रों मे पर्यटन उद्योग की असीमित संभावनाएं है परन्तु यह भी ध्यान रखना चाहिए कि पर्यावरण, स्थानीय संस्कृति, सभ्यता प्रभावित न हो पर्वतीय अंचल में फलो उद्यान आर्थिक समृद्धि के लिए महत्वपूर्ण है परन्तु पर्वतीय क्षेत्रों में मार्केटिंग, प्रोसेसिंग, भण्डारण एवं वितरण की व्यवस्था की जानी चाहिए। वनों के लुप्त होने, चारागाहों के विनाश के कारण पशुपालन में कमी आयी है। अतः चारागाहों एवं पशुचिकित्सालयों के विस्तार की आवश्यता है। पर्वतीय क्षेत्रों मे भस्खलन, भूक्षरण, बाढ़, को रोकने के लिए वृक्षारोपण एवं वन संरक्षण की आवश्यकता होती है। ग्रामीण इलाकों में पेयजल, चिकित्सा सड़क परिवहन उर्जा आदि कार्यक्रमों का विस्तार होना चाहिएं पर्वतीय विकास के लिए यदि उपर्युक्त सुझाओं को रखा जाय तो रोका जा सकता है।

सन्दर्भ सूचि :-

१-ध्समाना, योगेश : उत्तराखण्ड में जनजागरण और आन्दोलनों का इतिहास, विनसर प्रकाशन, देहरादून, प्रथम संस्करण २००६,
२-चन्दोला विश्वम्बर दत्त : प्राचीन प्रथा की रक्षा 'गढ़वाली' अगस्त १९०५
३-धूलियां, भैरवदत्त : उत्तराखण्ड पृथक राज्य की मांग का औचित्य, कर्म भूमि, २१नवम्बर १९७०
४-बहुगुणा, सुन्दरलाल : चिपकों आन्दोलन, युगवाणी २६मई १९७४
५-'युगवाणी' २१ जनवरी १९७९
६-बैरिस्टर, मुकंदीलाल : टिहरी गढ़वाल राज्य का भविष्य, 'युगवाणी', १५मार्च १९४८
७- पंत, गोविन्द राजू : सामाजिक- राजनैतिक एवं सांस्कृतिक रिपोर्टिंग (उत्तराखण्ड के संदर्भ में), पीजीडीजेएमसी, प्रथम प्रश्न पत्र, उत्तराखण्ड मुक्त विश्व विद्यालय, हल्द्वानी, नैनीताल।

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies